Review of Research
International Online Multidisciplinary Journal

ISSN : 2249-894X Impact Factor 3.1402 (UIF) Volume -5 | Issue - 6 | March - 2016

सामाजिक उन्नयन में महिला शिक्षा की भूमिका

प्रा. डॉ. वर्षा मनोहराव गंगणे
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
मनोहरभाई पटेल कला-वाणिज्य-विज्ञान एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
देवरी, जि. गोंदिया.

सारांश :

सामाजिक उन्नयन में महिला शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करते समय यह ज्ञात होता है की, महिलाओं को शिक्षा का स्तर जितना उंचा उतना सामाजिक उन्नती का स्तर उंचा होता है। स्वतंत्रता पूर्व काल एवं स्वतंत्रता पश्चात के काल का अध्ययन करने से यह तथ्य उजागर होता है की, महिलाओं की शिक्षा में सुधार आने से उनकी सामाजिक स्थिती में भी सुधार आया है। सामाजिक उन्नयन में महिला शिक्षा की भूमिका ऊस तरह है जिसतरह शरीर में रक्तसंचार करनेवाली नलिकाएं। यह नलिकाएं जितनी सक्षम एवं कार्यरत होगी शरीर उतनाही सुदृढ एवं सक्षम होगा।

६ मार्च २०१० को भारतिय महिलाओं ने दो महत्व उपलदियों पाई। पहली थी सेना कमोशन में स्थायी नियुक्ती और दूसरी चैन्नई से कोलंबो की एअर इंडिया की उड़ान सिंर्फ महिलाओ ने उखाई. जिसकी कॅप्टन एम.दिपा तथा पायलट सोनिया जैन थी। शिक्षा के विस्तृत दायरे का यह एक उदाहरण है। महिलाओं के शिक्षा का प्रमाण बढ़ने से समस्त महिलाएं प्रगती की उड़ान भर सकती है।

प्रस्तावना

देश के सर्वांगिण विकास में शिक्षा का स्तर उच्च होना एक सकारात्मक एवं अत्यावश्यक घटक माना जाता है। भारत में कुल जनसंख्या का ५० प्रतिशत हिस्सा महिला जनसंख्या है। इससे यह साबित होता है की, भारत

का विकास करने हेतू महिलाओं का विकास होना अनिवार्य है और महिलाओं के विकास हेतू उनकी शिक्षा का स्तर बढना अनिवार्य है।

- शिक्षा मानव की मानसिक एवं आध्यात्मिक खुराक है।
- शिक्षा से सोच बदलती है।
- शिक्षा आत्मसन्मान की डगर है जिसका मुकाम प्रगती है।
- शिक्षा समाजसुधार का आईना है।
- शिक्षा जीवन जीने की कला सिखाती है।
- शिक्षा सामाजिक उत्थान के लिये अनमोल वरदान है।

उपरोक्त कथनों से शिक्षा एवं समाज उन्नयन का प्रत्यक्ष सह-सबंध उजागर होता है।

महिला यह समाज का एक सक्रिय एवं महत्वपूर्ण समाज का सन्तुलन बनाए रखने के लिये महिला एवं पुरूष अनुपात में समानता होना अनिवार्य है। प्रत्येक देश का विकास ऊस देश की महिलाओं का गुणात्मक विकास, शिक्षा के अवसर शिक्षा का स्तर एवं शिक्षा के प्रमाण पर निर्भर करता है। जिस देश की सर्वाधिक महिलाएं साक्षर होती है वहां महिला सक्षम होती है। अर्थात समाज सक्षम एवं सुदृढ होता है। सामाजिक ढांचे के उन्नती में महिलाओं की शिक्षा एक अहम भूमिका अदा करती है।

भारत की संस्कृती का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है की, स्त्री एवं पुरूष सामाजिक संतुलन बनाए रखने क लिये महत्वपूर्ण घटक है। २० वी सदी के पश्चात स्त्री-पुरूष समानता के चर्चे सर्वत्र होने लगे है। स्त्रियों की स्थिती में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है । २००१ यह वर्ष महिला सक्षमीकरण वर्ष घोषित किया गया और महिलाओं में जागृती लाने हेतू अनेक कानून, अधिनियम तैयार किये गये। महिला शिक्षा हेतू केंद्र एवं राज्योंद्वारा अनेक योजनाएं बनायी गयी जिसमें १२ वी कक्षा तक छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान, निःशुल्क पासका प्रावधान महत्वपूर्ण है। फलस्वरूप भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाली लडकियों या महिलाओं की संख्या में वृद्धी हुई है। १९०१ में भारत में केवल ०.६० प्रतिशत महिलाए साक्षर थी। २००१ में महिला साक्षरता दर ५४ था। २०११ की जनगणनानूसार ६५ प्रतिशत महिलाएं साक्षर है। प्रतिवर्ष लगबग १.२५ लाख महिलाएं डाक्टर बनती है। कला शाखा में बी.ए. की उपाधी लेने वाली महिलाएं ५० प्रतिशत है। २१ प्रतिशत साफ्टवेअर व्यावसायिक तथा २५ प्रतिशत इंजिनियर एवं विज्ञान स्नातक है। संगठीत क्षेत्र में १८ प्रतिशत तथा ६.३८ प्रतिशत लाख गावों में से ७७,२१० गायों की पंचायतों की प्रधान महिलाएं है। विभिन्न नागरीक संस्थानो में १० लाख से अधिक महिलाएं कार्यरत है। ३० प्रत्यक्ष पूंजीनिर्मिती में तथा २० अप्रत्यक्ष पूंजी निर्माण में भारतीय महिलाओं का योगदान है। टी.व्ही. चैनल, फिल्म उद्योग, गृहोद्योग विज्ञापन आदि क्षेत्रों में महिलाओं का अधिपत्य है। उपरोक्त आकडों से यह ज्ञात होता है की, महिला आर्थिक उन्नती की राह में असर दिखाई दे रही है।

ग्रामिण एवं शहरी क्षेत्रों की तुलना करने से यह ज्ञात होता है की, शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा का प्रमाण अधिक है। फलस्वरूप उनकी आर्थिक एवं सामाजिक उन्नती अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के शिक्षा का स्तर निम्न है। प्राथमिक क्षेत्रों में वे अधिक कार्यरत है। परिणामस्वरूप उनका सामाजिक स्थान का दायरा सिमित है। सामाजिक उन्नती का अध्ययन करते समय स्त्रियों की आर्थिक स्थिती. उनका परिवार में स्थान, उन्हे मिलने वाला सन्मान, उनके साथ किया जानेवाला बर्ताव, पुरूषों की मानसिकता, स्त्रियों के अधिकार आदि सभी मुद्दोंपर विचार करना अनिवार्य है।

भारतीय समाज पर एक नजर डाले तो आज भी स्त्री-पुरूष असमानता, स्त्रियों का पिछडापन, स्त्रियों के आरक्षण को होने वाला विरोध, महिलाओं का संख्यात्मक दृष्टीसे कम होना आदि मुद्दे स्त्रियों के समाज में दुय्यम स्थान को उजागर करते है। वर्तमान स्थिती में एकतरफ प्रधानमंत्री पद पर विराजमान श्रीमती इंदिरा गांधी, राष्ट्रपतीपद पर विराजमान प्रतिभाताई पाटील, समस्त स्त्री जाती के लिये आदर्श एवं प्रेरणा का स्त्रोत है। किंतु उच्च पदों पर काम करनेवाली महिलाओं का प्रमाण अत्यंत कम है। वर्तमान समय में दिल्ली में घटीं सामूहिक बलात्कार जैसी घटना, दहेजप्रथा की बली. हिंसाचार, अपहरण, यौन शोषण आदि घटनाएं महिलाओं को अंधकारमय युग के आने की चेतावनी देती है। इसका स्पष्ट मतलब यह है की, आज तक सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने में हम असफल रहे है।

सामाजिक डांचा सुधारने हेतु अथवा उसके उन्नयन हेतू महिला शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। जहाँ स्त्रियों की साक्षरता का प्रमाण अधिक है वहाँ उन्हें अपने अधिकारों की पहचान है। प्रगती के रास्ते उनके लिये

खुल जाते है। सामाजिक बुराइयों का शिकार होने का प्रमाण अत्यंत निम्न है। शिक्षा से महिलाएं निर्णय, निर्भिड होती है। शिक्षा उनमें आत्मविश्वास पैदा करती है। शिक्षा से वह अपने पैरों पर खडी हो सकती है। संघटित हो सकती है। शिक्षा से उन्हे जीवन जीने की राह मिलती है। अंधविश्वास, रूढी, परंपराओं का पालन करना, पुराने खयालात, सिमित सामाजिक सोच आदि बाते अशिक्षित स्त्रियों में अधिक पायी जाती है। महिला विरोधी मानसिकता, सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था, अर्थतंत्र आदि क्षेत्रों में पुरूषों का वर्चस्व है। स्त्री केवल एक भोगवस्तू के स्वरूप में इस्तेमाल की जानेवाली कठपुतली है। जिसे स्वंय का मत प्रदर्शित करने का अधिकार नहीं है। चाँका बर्तन एवं खाना बनाना, बच्चों को जन्म देना इतने संकूचित दायरे मे महिलाएं अपना जीवन व्यतीत करती है। विभिन्न रिश्तों के बंधन में स्त्रियों को बंदिस्त बना दिया जाता है। जिससे वह स्वयं की प्रगती, अपनी इच्छाएं भूल जाती है। या सामाजिक शृंखला में उलझकर रह जाती है। जिसका परिणाम बदती भृणहत्याएं. अपमानजनक बर्ताव, लिंगानुपात में अंतर आदि प्रश्न उभरकर सामने आते है।

सृष्टी की रचना करनेवालेने महिला को इस तरह बनाया की, वह खुद समस्त समाज का दुनिया सृजन कर सके। माहेला स्वयं संसार के भविष्य की, समाज की निर्माती है। युग चाहे जो भी हो संसारको तरक्की नारी के विकास पर ही निर्भर है। इसीवजह से मनुस्मृती में "यत्र नारियस्तु पुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" अर्थात जहा नारीयों की पूजा होती है वहां देवता वास करत है। ऐसा कहा गया है।

जिस देश मे महिला सुदृढ, वहां की समाजव्यवस्था सुदृढ फलस्वरूप देश सुदृढ होगा यह वास्तविकता एवं सत्य है। महिला सुदृढ होने के लिये उसका शिक्षित होना अनिवार्य है। भारत के विभिन्न राज्यों में महिला शिक्षा का प्रमाण भिन्न-भिन्न है। उदाहरण के तौर पर बिहार, उडिसा, परिजन बगाल, राजस्थान आदि राज्यों में महिला शिक्षा का प्रमाण निम्न है, फलस्वरूप स्त्रियों के प्रति वर्ताव समाजिक वाचा स्त्रियों का विकास दर निम्न है। इसके ठिक विपरित, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल आदि राज्यों महिला शिक्षा का स्तर उच्च होने से वहां की सामाजिक स्थिती अधिक उन्नत एवं महिलाओं के प्रति सकारात्मक सोच रखनेवाली एवं विचारशील है। निचे दर्शाए गये आलेख से महिला शिक्षा एवं समाजकी उन्नती का सहसंबंध दर्शाया गया है।

महिला शिक्षा एवं समाज की उन्नती का सहसंबंध

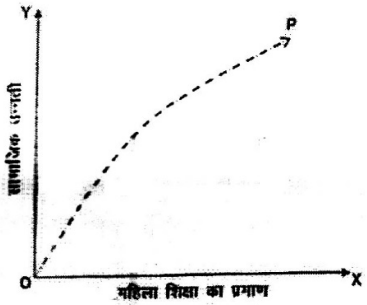

आकृती क्र. 1

स्पष्टीकरण :- आकृती क्र. १ मे वग अक्ष महिला शिक्षा का प्रमाण दर्शाता है। OY अक्ष सामाजिक उन्नती दर्शाता है। OP यह उपर की और बढता वक्र महिला शिक्षा एक समाज की उन्नती का सहसंबंध दर्शाता है।

उपरोक्त आकृती से यह स्पष्ट होता है की, जैसे-जैसे महिला शिक्षा का प्रमाण बढ़ता है, वैसे-वैसे सामाजिक उन्नती होती नजर आती है। महिला शिक्षा एवं सामाजिक उन्नती का प्रमाण संवा एवं सकारात्मक होने से OP यह वा धनात्मक आकार का दर्शाया गया है।

भारत देश में स्त्री एव पुरुष साक्षरता में भिन्नता दिखाई देती है, फलस्वरूप स्त्री-पुरूष भटकों के अस्तित्व में भिन्नता दिखाई देती है, जिसका सामाजिक ढांचे पर विपरीत परिणाम स्पष्टरूपसे देखा जा सकता है। महिलाओं का दुय्यम दर्जा इसका प्रमाण है।

निम्न आकृतीद्वारा महिला एवं पुरूष साक्षरता की दर को दर्शाया जा सकता है। जो असमानता को उजागर करती है।

स्त्री-पुरूष साक्षरता में असमानता

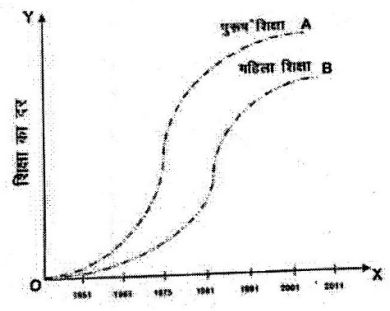

स्पष्टीकरण :- उपर दर्शाए गए आकृती २ OX वर्ष दर्शाता है। OY अक्ष शिक्षा का दर दर्शाता है। OA वक्रेषा पुरुष शिक्षा दर एवं OB वक्रेखा महिला शिक्षा दर को दर्शाती है।

उपरोक्त आकृती में १९५१ से २०११ इस काल में, १२ पंचवर्षिय योजनाओं में पुरुष शिक्षा का स्तर महिला शिक्षा स्तर से अधिक दिखाई देता है। जिसके फलस्वरूप । वक्रेखा OA वक्रेषा से उपर दर्शायी गयी है। १९९१ के पश्चात महिला शिक्षा का प्रमाण बढता दिखाई देता है।

वर्तमान स्थिती में आज महिलाएं घर के अंदर बाहर, गायों तथा शहरों में, महानगरों में, अपनों के बीच सभी जगह असुरक्षित है।

१. राष्ट्रीय महिला आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार - देश के ६१२ जिले में किये गए अध्ययन के अनुसार नाबालिक लड़कियों के यौन शोषण की संख्या. सर्वाधिक है। बच्चों एवं महिलाओं की तस्करी होती है।

२. सीबीआई की एक रिपोर्ट के अनुसार - भारत में रेडलाईट क्षेत्रों में १३ लाख से अधिक महिलाएं वेश्यावृत्ती की शिकार है। मुंबई के कमाठीपुरा इलाके में लग ग ७०,००० से अधिक यौनकर्मो है। महिलाओं के प्रति हिंसा एवं बलात्कार के मामले में प्रतिवर्ष वृद्धी हो रही है।

विश्व के सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में बड़ी तेजी से परिवतन हो रहा है। किन्तु इसमें स्त्रियों की उन्नती में उतनी तिनता से परिवर्तन होता दिखाई नही देता। महिला चांद पर जा सकती है थैमानिक बन सकती है विशेष सेना का नेतृत्व कर सकती है। देश का प्रतिनिधित्व कर सकती है, हिमालय पर चढ़ सकती है तो सामाजिक उन्नती में अपना योगदान क्यों नही दे सकती? यह प्रश्न उपरकर सामने आता है। इसका एकमात्र उत्तर यही है का, महिलाओं में शिक्षा का अभाव, शिक्षा के प्रति कम रुझान होना, शिक्षा को अनावश्यक समझना आदि।

उच्च शिक्षा के सुधारात्मक परिणाम :

महिला शिक्षा के प्रमाण को बढाना यह सामाजिक ढांचे में सुधार लाने का एकमात्र साधन है, इसमें दो राय होने की संभावना नही है। उच्च शिक्षा के निम्न सुधारात्मक परिणाम देखे जा सकते है।

१) उच्च शिक्षा प्राप्त करने से महिलाओं में आत्मविश्वास की वृद्धी होती है।
२) महिलाओं में निर्णय क्षमता का साहस बढता है।
३) उच्च शिक्षा प्राप्त करने से महिलाओं को उनके अधिकार एवं कानून ज्ञात होते है।
४) महिलाओं में सकारात्मक सोच निर्माण होती है।
५) स्वयं के सुरक्षा के मार्ग ज्ञात होते है।
६) अन्याय एवं अत्याचारों से निपटने की ताकद उत्पन्न होती है।
७) आर्थिक दृष्टी से महिला सक्षम बनती है।
८) सामाजिक स्थिती में बदलाव एवं सुधार आता है।
९) शिक्षा से लिंगानुपात में समानता एवं स्त्री-पुरूष बर्ताव में समानता आती है।
१०) महिला विकास के मार्ग प्रशस्त होते है फलस्वरूप समाज के विकास एवं देश के विकास के मार्ग प्रशस्त होते है।

उपरोक्त मुद्दों पर विचार करने से यह ज्ञात होता है की, शिक्षा एवं सामाजिक उन्नयन इनका प्रत्यक्ष एवं गहरा संबंध है।

निचे दर्शाये गए आकृतीद्वारा महिला शिक्षा एवं सामाजिक उन्नयन की स्थिती को दर्शाया जा सकता है।

महिला शिक्षा एवं सामाजिक स्थिती.

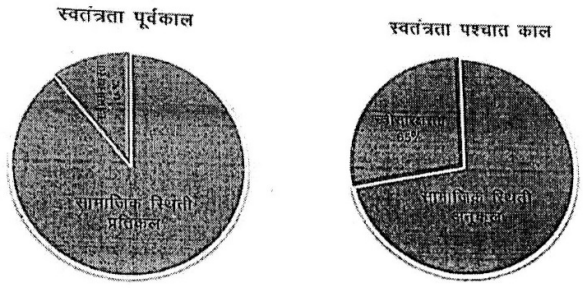

आकृती क्र. 3

निष्कर्ष :

सामाजिक उन्नयन में महिला शिक्षा की भूमिका इस विषय का अध्ययन करने से यह ज्ञात हुआ है की महिलाओं का समाज में स्थान सन्मानजनक बनाने हेतू. समाज के विकास हेतू महिलाओं का शिक्षित होना अनिवार्य है। १ महिला शिक्षित होने से उसके संपर्क में आनेवाले २ घर शिक्षित होते है। मराठी में यह कहावत इसे अधिक स्पष्ट करती है।

"जिच्या हाती पाळण्याची दोरी।
ती जगाला उद्धारी ।।"

शिक्षा से आर्थिक दृष्टीसे स्त्री स्वयंनिर्भर होती है, जिसका सीधा असर उसकी सामाजिक स्थिती पर होता है। शिक्षा में, आज नैतिक मुल्यों का अध्ययन, स्वसुरक्षा, मौलिक अधिकार, मुलभूत कानून, स्त्री संगठन आदि विषयों का समावेश होना अनिवार्य है ऐसा मुझे लगता है। समाज में महिला स्वयं का स्थान शिक्षा के आधार पर बना सकती है। जिससे महिलाओं की ओर देखने का समाज का दृष्टीकोन साकारात्मक होगा। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने कहा था "शिक्षा शेरनी का यह दुध है, जो इसे पियेगा वह गुर्राये बिना नही रहेगा।

मेरे शब्दों में - यह हंसी तो विश्व हसेगा।
यह रोई तो विश्व रोएगा।
वह रही तो युग रहेगा
वह नही तो युग, मिटेगा।।

संदर्भसूची :

१. मिश्रा एम.ए. शर्मा रमा. "महिला सशक्तीकरण" अर्जून पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्र.सं. २०१२.
२. वाचक शालिनी, "भारतीय स्थानिक प्रशासन" अर्जून पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्र.सं. २००३.
३. योजना : "स्त्री सशक्तीकरण" जून २०१२, पृष्ठ क्र. ४३